जोधपुर मंडल एक परिदृश्य

ऐतिहासिक परिदृश्य

भारत की धरती पर पहली बार अर्थात् मीटर गेज लाइन दिनांक 14 फरवरी 1873 को राजपूताना रेलवे के नाम से दिल्ली से रेवाड़ी तथा फारूखनगर साल्ट शाखा तक शुरू की गई। इस मीटर गेज लाइन को दिनांक 01अगस्त 1875 को अजमेर तक लाया गया। दिनांक 16 फरवरी 1881 को जोधपुर रेलवे के बैनर तले खारची से पाली तक 20 मील लम्बी रेल लाइन के निर्माण का कार्य शुरू किया गया। यह कार्य दिनांक 28 फरवरी 1882 को पूरा किया गया। दिनांक 24 जून 1882 को इस लाइन को यातायात के लिए खोल दिया गया। जोधपुर – बीकानेर रेलवे के रोलिंग स्टाक के अनुरक्षण के लिए वर्ष 1886 में जोधपुर वर्कशाप की स्थापना की गई।

यह रेलवे प्रणाली जोधपुर रेलवे (जे. आर) के नियंत्रण में कार्य कर रही थी। अब तक इस क्षेत्र में रेल तंत्र के विस्तार में आशातीत प्रगति हुई है। आज का जोधपुर मंडल स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद अस्तित्व में आया। जोधपुर रेलवे के सभी मुख्य स्थानों को समाहित करते हुए तथा अन्य पड़ोसी मंडलों के साथ मामूली समायोजन करते हुए एक नये मंडल का गठन किया गया जिसका मुख्यालय जोधपुर था।

महाराजा जोधपुर के पास अपने निजी सैलून थे जिनकी संख्या 01 से 13 तक थी । वर्ष 1936 में सैलून नं.13 दरबार और जोधपुर रेलवे के वरिष्ठ पदाधिकारियों के उपयोग हेतु बनाया गया जिसको बाद में "पैलेस ऑन व्हील्स" के नाम से चलाया गया ।

यूनीगेज नीति के अंतर्गत पूरे मंडल का आमान परिवर्तन का कार्य पूरा किया जा चुका है तथा उत्तर पश्चिम रेलवे का केवल जोधपुर मंडल ही ऐसा मंडल है जिसके मार्ग का आमान परिवर्तन का कार्य शत-प्रतिशत पूरा हो चुका है।

यह मंडल पश्चिमी राजस्थान के संवेदनशील सीमावर्ती क्षेत्रों अर्थात् जैसलमेर और बाड़मेर जिलों, में सेवाएं देता है जहां महत्वपूर्ण रक्षा प्रतिष्ठान स्थित है। मंडल सैन्य कर्मियों और सामान ले जाने के लिए अक्सर सैन्य आवाजाही का संचालन करता है। राई का बाग – जैसलमेर सेक्शन पर पोकरण के पास परमाणु परीक्षण स्थल भी स्थित है । इस मंडल को "पैलेस ऑन व्हील्स " और "रॉयल राजस्थान ऑन व्हील्स" नामक महत्वपूर्ण गाड़ियों का संचालन करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। मंडल में बड़ी संख्या में किले, हवेली, पुराने स्मारक है जो विदेशी और भारतीय पर्यटकों को आकर्षित करते हैं।

जोधपुर मंडल गुजरात राज्य के बनासकांठा जिले के अलावा राजस्थान के 09 अर्ध नगरीय जिलों, अर्थात जोधपुर, पाली मारवाड, नागौर जालोर चुरू, बीकानेर, बाडमेर, जैसलमेर तथा जयपुर की परिवहन आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। ये राजस्थान राज्य के महत्वपूर्ण सांस्कृतिक औद्योगिक केन्द्र है। वस्त्र उद्योग तथा हैंडीक्राप्ट ने विशेष रूप से इस क्षेत्र में योगदान दिया है। जैसलमेर क्षेत्र में लाइम स्टोन के भंडार देश के इस्पात व सीमेंट संयत्रों की आवश्यकताओं की पूर्ति करने में पर्याप्त है। मार्बल और ग्रेनाइट भी इस क्षेत्र में प्रचुर मात्रा में पाया जाता है। इस मंडल ने सदैव सूखे (अकाल) के दौरान इस क्षेत्र में रहने वाले लोगों की सेवा की है।

तत्वरित विकास

जैसलमेर में पाए गए लाइम स्टोन के भंडार देश की इस्पात व सीमेंट प्लांट की आवश्यकताओं की पूर्ति कर रहे हैं। लाइम स्टोन के अलावा सांभर लेक के आसपास नमक के क्षेत्र लगातार नमक यातायात के लिए वचनबद्ध है। मोहन गढ में पाए गए जिप्सम के भंडार जिप्सम की 06 मिलियन टन की क्षमता रखते हैं।

जोधपुर – जैसलमेर सेक्शन के थैयात हमीरा स्टेशन से इसकी बडी मात्रा में लदान की जा रही है जिसकी भविष्य में और बढाने की संभावना है। बाडमेर के पास बडे तेल के स्त्रोत पाए गए हैं। राजस्थान सरकार एवं हिंदुस्तान पेट्रोलियम कारपोरेशन लिमिटेड द्वारा पचपद्रा में एक ऑइल रिफाइनरी भी लगाई जा रही है। आगामी वर्षों में इससे रेलवे को अतिरिक्त यातायात उपलब्ध हो सकता है।

इस क्षेत्र में कई सीमेंट प्लांट उभर कर आए हैं। ब्यावर में स्थित मैसर्स डी एल एफ सीमेंट लि. (अब राजस्थान अम्बूजा सीमेंट लि.) मेडता रोड स्टेशन से लदान कर रहा है। इस क्षेत्र में कई छोटे छोटे सीमेंट प्लांट भी स्थित है। व्हाइट सीमेंट प्लांट गोटन और खांरिया खंगार में स्थित है। मंडल में विभिन्न सामान अर्थात हैंडीक्राप्ट, व्हाइट सीमेंट इत्यादि की लदान कंटनेर से शुरू की है।

****